श्री वासुपूज्य विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री वासुपूज्य विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वासुपूज्य विधान

जय बोलिये

देवों के देव,
नाथों के नाथ
पूज्यों के पूज्य,
महापूज्य, सर्वपूज्य,
विश्वपूज्य, जगत्-पूज्य,
त्रिलोक पूज्य, आत्म पूज्य
परमपूज्य
श्री वासुपूज्य भगवान् की जय॥

भजन

(दोहा)

वासुपूज्य तीर्थेश हैं, हम सब के आधार।
भक्ति भजन हम भी करें, नमन अनंतों बार॥

(लय : आसरा इस जहाँ....)

प्रार्थना आप से बस यही है प्रभो, हमको चरणों की धूली बना लीजिए।
भावना आखरी है हमारी यही, हमको अपनी शरण में बुला लीजिए॥
प्रार्थना आपसे बस..... ॥ 1 ॥

चाहे सुख में रखो, चाहे दुख में रखो, जैसी मर्जी तुम्हारी, तुम वैसा रखो।
हमको मंजूर हर फैसला आपका, हम पै अपना कृपा जल बहा दीजिए॥
प्रार्थना आपसे बस..... ॥ 2 ॥

हर तरफ भोग के आँधी तूफान हैं, हम हैं नन्हें दीये बाल नादान हैं।
हमको बुझने से पहले हमारे प्रभो, ज्योति अन्तर की सम्यक् जला दीजिए॥
प्रार्थना आपसे बस..... ॥ 3 ॥

लक्ष्य नजरों से ओझिल दिखे कुछ नहीं, हम को जाना कहाँ राह सूझे नहीं।
ऐसे में हमको देकर सहारा प्रभो, अपने आँचल में जल्दी छिपा लीजिए॥
प्रार्थना आपसे बस..... ॥ 4 ॥

आप मंजिल हमारी हो परमात्मा, जो भी भूलें हमारी वो कर दो क्षमा।
शीघ्र भक्तों को खुशियों की बौछार दें, अपनी करुणा की धारा बहा दीजिए॥
प्रार्थना आपसे बस..... ॥ 5 ॥

तेरी छाया में हम भी तो फूलें फलें, हम जहाँ भी रहें नेक पथ पर चलें।
भक्ति पुष्पों से 'सुव्रत' की आतम खिले, ऐसी चेतन की बगिया खिला दीजिए॥

श्री वासुपूज्य विधान

स्थापना (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराज।
नमन करें हम तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

(ज्ञानोदय)

जिन चरणों में सारी दुनियाँ, श्रद्धा से नत मस्तक है।
उनके दर्शन पूजन को अब, भक्तों ने दी दस्तक है॥
इतनी शक्ति कहाँ है हममें, नाथ! आपको बुला सकें।
करें महोत्सव, भाव भक्ति से, चरण अर्चना रचा सकें॥
फिर भी विरह वेदना से हम, तड़फें भर-भर के आहें।
कब आओगे? कब आओगे?, अखियाँ तकती प्रभु राहें॥
देहालय का मन मंदिर यह, आप बिना तो है शमशान।
आप पधारो इसमें तो यह, बन जायेगा मोक्ष महान्॥

(दोहा)

दोष कोष हम हैं प्रभो, दुनियाँ में मद-होश।
छींटा मारो ज्ञान का, आये हम को होश॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.....)

केवल सुख की आशा में हम, जिनको अपना मान रखे।
उनसे दुख ही दुख पाते पर, उन्हें तनिक ना त्याग सके॥
जन्म मरण जो देते आये, क्या ये मिथ्या दल-मल है।
यदि है तो इनको धोने में, तेरा मात्र कृपाजल है॥
अंतर बाहर शुद्धि को, अर्पित यह जलधार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

कितना हमने सहन किया प्रभु,कब तक और सहन करना।
अब तो ढोया जाए न हमसे, कितना भार वहन करना॥
अनादिकाल से तपते आये, अब तो तपा नहीं जाता।
राग द्वेष की इस ज्वाला को, अब तो सहा नहीं जाता॥
चंदन से वंदन करें, हरो राग अंगार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

कहीं मोह के गहरे गड्ढे, कहीं मान का उच्च शिखर।
कहीं राग माया का दल-दल, कहीं क्रोध का तीव्र जहर॥
ऐसे में जब राह न सूझे, कहो! किसे तब ध्याना है?
शरण आपकी आ पहुँचे तो, और कहाँ अब जाना है?
शरण प्राप्ति को चरण में, अक्षत हैं तैयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

एक तरफ यह विश्व जहाँ पर, हल्दी मेंहदी में उलझा।
वहीं आपका ब्रह्म स्वरूपी, चेतन इनसे है सुलझा॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेंहदी, सचमुच तुम तो हो हीरा।
अगर आपकी छाँव मिले तो, हम अब्रह्म हरें पीड़ा॥
काम नाश को सौंपते, पुष्पों का उपहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

कभी भोजनालय में जाकर, कभी औषधालय में जा।
ज्यों-ज्यों दवा कराई त्यों-त्यों, रोग बढ़े ज्यादा-ज्यादा॥
आप जिनालय में पहुँचे तो, स्वस्थ्य हुये सिद्धालय में।
भूख प्यास से अब क्या हो जब, मस्त हुये तेरी जय में॥
क्षुधा रोग नैवेद्य से, कर पायें परिहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

मोह अँधेरा ऐसा छाया, हम भूले अपने घर को।
अब अपना अहसास हुआ है, जब से पूजा जिनवर को॥
ज्ञान सूर्य को दीप दिखाना, यह उपचार नहीं होता।
दीप जलाये बिन भक्तों का, निज उद्धार नहीं होता॥
दीप जला आरति करें, नशे मोह अँधयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

दौड़-धूप कितनी की आखिर, अपना घर तो विखर गया।
दीप-धूप करने वालों का, घर मंदिर-सा निखर गया॥
कर्मों के आँधी तूफाँ में, धूप तपस्या की महके।
तो चेतन गृह में आतम की, सोन चिरैया भी चहके॥
धूप चढ़े तो कर्म का, होता है संहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

ज्यों रसदार फलों को कीड़े, नीरस निष्फल कटुक करें।
वैसे ही परभावों के फल, महामोक्ष को नष्ट करें॥
''पुण्य फला अरिहंता'' से कब, महामोक्ष फल दूर हुआ।
अतः फलों के गुच्छ चढ़ाने, भक्त वर्ग मजबूर हुआ॥
महा मोक्षफल प्राप्ति को, अर्पित फल रसदार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

अष्ट-कर्म हों कभी विरोधी, सहयोगी हों यदा-कदा।
लेकिन अष्ट द्रव्य का मिश्रण, सहयोगी हो सदा-सदा॥
आत्म द्रव्य सहयोगी करने, भक्तों का सहयोग करो।
अपने भक्तों को हे स्वामी!, अपने जैसा योग्य करो॥
तुम को तुम से माँगते, करो अर्घ्य स्वीकार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : बाजे कुल्डलपुर में बधाई...)

हुआ चम्पापुर में महोत्सव², कि स्वर्गों से देव आये²,वासुपूज्य जी।
माँ ने सोलह सपने देखे², कि त्रिलोकीनाथ आये², वासु....
माँ जयावती हर्षायी², कि गर्भ में पूज्य आये², वासु....
आषाढ़ कृष्ण छठ आई², कि सुर नर गीत गाये² वासु....
कृष्णा छठ आषाढ़ को, महाशुक्र सुर त्याग।
जयावती के गर्भ में, वसे पूज्य जिनराज॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बाजे चम्पापुर में बधाई², कि नगरी में पूज्य जन्मे², वासु....
घड़ी जन्मोत्सव की पाई², कि त्रिलोक में आनंद छाये², वासु....
अभिषेक हुआ मेरु पर², कि देव क्षीर जल लाये², वासु....
फागुन वदि चौदस आई², कि शचि सुर नर झूमें², वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

फाल्गुन वदि चौदस आई², कि प्रभु हुये वैरागी², वासु....
लौकांतिक देव पधारे², कि बने तप सहभागी², वासु....
फिर पुष्पाभा शिविका से², कि वन मनोहर पहुँचे², वासु....
झट नमः सिद्धेभ्य कहकर², कि केशलौंच किये त्यागी², वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गये, सादर जिन्हें नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपो मङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब दूज माघ सुदि आई², कि घातिकर्म सब नाशे², वासु....
तब बने केवली स्वामी², कि लगा समवसरण प्यारा², वासु....
फिर खिरी दिव्यध्वनि मंगल²,कि गूँजे जय-जयकारे², वासु....
बही तत्त्वज्ञान की धारा², कि धर्म ध्वजा फहराई², वासु....

दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनंतों बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भादों सुदि चौदस आई[2], कि कर्म सारे हर डाले[2], वासु....
हुई मुक्तिवधू नत नयना[2], कि वरमाला तुम्हें डाली[2], वासु....
हुई चंपापुर से मुक्ति[2], कि पाँचों कल्याण हुये[2], वासु....
बाजे चंपापुर शहनाई[2], कि प्रभु को मोक्ष हुआ[2], वासु....
भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनंत चौदस साथ।
चंपापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

दर्शन का अतिशय महा, रुचे नहीं संसार।
अतः कहें जयमाल हम, नत हो बारम्बार॥

(ज्ञानोदय)

बारहवें प्रभु वासुपूज्य हैं, बारह अंगों के दाता।
बारह सभासदों के स्वामी, बारह तपो अधिष्ठाता॥
बारह भावनायें भा करके, बारह विधि के बजा दिये।
सो बारह चक्री इन्द्रादिक, चरणों में सिर झुका दिये॥ 1॥

जिन चरणों में महापुरुष भी, झुक-झुक शीश झुकाते हैं।
उन चरणों में झुक-झुक हम भी, अपना भाग्य जगाते हैं॥
इन्द्र पूज्य, वसुपूज्य पुत्र हैं, वासुपूज्य तीर्थंकर जो।
जिनका नाम अकेला हरले, संकट महाभयंकर जो॥ 2॥

एक हुए पद्मोत्तर राजा, करें धर्ममय भू-पालन।
जिसने जिनवर के दर्शन कर, किया अर्चना और नमन॥
तब प्रभु से उपदेश प्राप्त कर, तत्त्वज्ञान उत्पन्न हुए।
राज्य सौंप धनमित्र पुत्र को, संयम धार प्रसन्न हुए॥ 3॥

तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, महाशुक्र में इन्द्र हुए।
भोग स्वर्ग सुख, सपने देकर, चम्पापुर में जन्म लिए॥
धर्म हुआ विच्छेद जहाँ पर, वहीं हुआ जन्मोत्सव था।
नगर शहर घर बजी बधाई, हुआ पूर्ण सुभिक्ष तब था॥ 4॥

कुमारकाल बिताकर प्रभु ने, नश्वर जग का चिंतन कर।
निज को सजा, सजा विधि को दें, तप धारा बेला कर कर॥
देवों ने तप कल्याणक कर, पुण्य कमाया मौके में।
अगले दिन फिर हुई पारणा, सुन्दर नृप के चौके में॥ 5॥

एक वर्ष छद्मस्थ बिताकर, कदम्ब तरुतल में थित हो।
घाति कर्म हर बने केवली, अतः सभी से पूजित हो॥
समवसरण में छ्यासठ गणधर, बहत्तर हजार मुनि ध्यानी।
अनगिन जन से भरे खचाखच, सभासदों के तुम स्वामी॥ 6॥

आर्यक्षेत्र में विहार करके, धर्मवृष्टि कर वापस आ।
एक हजार वर्ष तक रहकर, चंपापुर में ध्यान लगा॥
रजतमालिका नदी किनारे, मंदरगिरि पर थित होकर।
साँयकाल में मोक्ष पधारे, बंधन हर वंदित होकर॥ 7॥

ये ऐसे तीर्थंकर हैं जो, पहले बाल ब्रह्मचारी।
राज्य न भोगे, और जिन्हें भी, रुची नहीं दुनियाँदारी॥
जिनके पाँच हुए कल्याणक, सबके सब चंपापुर में।
जिनके ध्याता भक्त पहुँचते, देखो शीघ्र मोक्षपुर में॥ 8॥

जिनके शासन तीर्थकाल में, द्विपृष्ठ नामक नारायण।
तथा अचल बलभद्र हुए थे, थे तारक प्रतिनारायण॥
ऐसे वासुपूज्य प्रभु करते, नित कल्याण भक्त जन का।
मंगल ग्रह क्या मोह अमंगल, टले मिले फल पूजन का॥ 9॥

अतः हमें प्रभु वासुपूज्य को, निज आदर्श बनाना है।
ब्रह्मचर्य की कठिन साधना, प्रभु जैसी अपनाना है॥
चलकर जिनके महामार्ग पर, प्रभु प्रसाद को पाना है।
रागद्वेष को मंद बनाकर, वीतरागता लाना है॥ 10॥

मुक्तिवधू अब भायी तो फिर, शादी ब्याह रचाना क्यों?
मुक्तिवधू से मन लागा तो, मन अन्यत्र लगाना क्यों?
मुक्तिवधू से होए सगाई, पिछी कमण्डल धारो तो।
सिद्धालय में हो वरमाला, वासुपूज्य को ध्यायो तो॥ 11॥

(सोरठा)

भैंसा जिनका चिह्न, वासुपूज्य वे नाथ हैं।
पाए मुक्ति अभिन्न, अतः चरण में माथ हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

वासुपूज्य स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, वासुपूज्य जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(बारह भावना)

(विद्योदय)

जग तृष्णा पर्यायें सपने, सभी सत्य हैं।
हैं ये क्षणिक, नहीं हैं अपने, अतः अनित्य हैं॥
हम भी त्यागें इन्हें आपने त्यागा जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 1॥

ॐ ह्रीं नित्यसंपत्तिदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुछ भी करो मरण निश्चित है, कहाँ सुरक्षा?
अतः शरण के योग्य चरण में, धारो दीक्षा॥
निज को पायें, निज को तुमने, पाया जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 2॥

ॐ ह्रीं आश्रयदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सुख चाहें, दुख जहाँ मिले संसार वही है।
क्यों फँसते हे! प्राणी जिसमें सार नहीं है॥
भव को छोड़ें हम भी तुमने छोड़ा जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 3॥

ॐ ह्रीं दुःखविनाशकसुखदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चलो! अकेले, चलो! अकेले, कोई न साथी।
अतः प्रभु ने घर न वसाया, की नहिं शादी॥
एक बने हम अंदर बाहर, तुम हो जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 4॥

ॐ ह्रीं एकत्वविरहवेदनानाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हम वो हैं जो दृश्य जगत् से, भिन्न अन्य हैं।
ये न हमारे हम नहिं इनके, सो प्रसन्न हैं॥
इनसे हों हम मुक्त हुए, हो तुम भी जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 5॥

ॐ ह्रीं परवस्तु आसक्तिनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अशुचि देह से शुद्ध विदेही, क्या मिल पाते।
फिर भी तन-शृंगारों से हम कष्ट बढ़ाते॥
करें भेदविज्ञान ध्यान भी, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 6॥

ॐ ह्रीं देह अशुद्धिभावनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अच्छे बुरे विचार हमारे, भाग्य-विधाता।

तभी मोह से निज में निज का, चित्र न आता॥
तजें अशुभ सब भाव आपने त्यागे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 7॥

ॐ ह्रीं वैमनस्यभावनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

रोको, रोको उनको जो नित, हमें सुलाते।
जागो चेतन संयम धारो, संत बताते॥
आस्रव रोकें संवर धारें, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 8॥

ॐ ह्रीं सदाचारदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्यों-ज्यों भार हुआ कम त्यों-त्यों पहुँचो ऊपर।
सम्यक् जप-तप झट पहुँचाये अष्टम भूपर॥
करें निर्जरा का प्रयत्न हम, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 9॥

ॐ ह्रीं पुरुषार्थहीनतानाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हमें लोक में परवश निजवश फिरना होगा।
पर निज लोक वसे तो फिरना, फिर ना होगा॥
लोकशिखर को हम पायें तुम, पाये जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 10॥

ॐ ह्रीं व्यर्थभ्रमणनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निःसंतान सुलभ आत्मा कब, माँ बन जाये।
रत्नत्रय संतान कठिन की, झट मिल जाये॥
हम अर्हंत सिद्ध बन जायें, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 11॥

ॐ ह्रीं दुर्लभवस्तुदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

धर्म ''अहिंसा परमो धर्मः'', निज का दाता।
मालामाल करे ना तो फिर कैसा नाता?

निज स्वभाव में लीन रहें हम, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 12॥

ॐ ह्रीं अविनश्वरसाथीदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(बारह तप वर्णन)

खान-पान से खान-दान भी, बिगड़े सुधरे।
अतः करो उपवास जभी प्रभु, मूरत उभरे॥
अनशन करें रमें निज में हम, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 13॥

ॐ ह्रीं निज-निवासदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

इच्छा से कम खाना-पीना, ऊनोदर है।
हम अपने में स्वयं पूर्ण यह, ध्यान किधर है॥
ऊनोदर से इच्छा त्यागें, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 14॥

ॐ ह्रीं निज इच्छापूरक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तरह-तरह के कठिन नियम ले, चर्या करना।
पुण्य परीक्षा हरे समस्या, दे निज-झरना॥
वृत्तिपरिसंख्यान करें हम, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 15॥

ॐ ह्रीं भिक्षावृत्तिदोषनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

षट्रस तजकर नीरस लेकर, पेट भरो तो।
निज से निज का निज रस लेकर, श्रेष्ठ बनो तो॥
रस परित्याग करें हम स्वामी, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 16॥

ॐ ह्रीं रसविकारनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

एकांत वासा झगड़ा न झाँसा, हरे समस्या।
अतः गुफा एकांत वास में, करो तपस्या॥

विविक्त शैय्यासन अब करना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 17॥

ॐ ह्रीं निद्रा आसनविकारनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तरह-तरह के तप कर अपनी देह सुखाना।
काय क्लेश से जैन भेष से, निज सुख पाना॥
धरें सदा हम कायक्लेश तप, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 18॥

ॐ ह्रीं कायवेदनानाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रमाद या अज्ञान दशा से, दोष लगें जो।
तप आदिक से शुद्ध बनाकर, पूर्ण भगें वो॥
प्रायश्चित्त हमें भी करना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 19॥

ॐ ह्रीं दोष शुद्धिदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूज्य जनों का आदर करना, विनय कहाता।
विनय मोक्ष का महाद्वार हर, कार्य बनाता॥
विनयशील हमको भी बनना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 20॥

ॐ ह्रीं मानसम्मानवर्धक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तन मन धन से संत जनों की, सेवा करना।
सेवा से ही आत्म गुणों का, झरता झरना॥
वैयावृत्य हमें भी करना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 21॥

ॐ ह्रीं परस्परसेवकभावदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आलस तज कर ज्ञान भावना, में रत रहना।
ज्ञान भावना करने आलस, कभी न करना॥
ऐसा हो स्वाध्याय हमें भी, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 22॥

ॐ ह्रीं आलस्य अज्ञाननाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अहंकार ममकार त्याग कर, परिग्रह तजना।
बाहर अंदर तन-मूर्च्छा तज, ज्ञानी बनना॥
हमें यही व्युत्सर्ग प्राप्त हो, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 23॥

ॐ ह्रीं परिग्रहदोषनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मन की चंचलता को तज कर, ध्यान लगाना।
चिंतन मंथन से आगम का, मक्खन खाना॥
ज्ञानी ध्यानी हमको बनना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 24॥

ॐ ह्रीं ध्यानदोषनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(रोहणी अर्घ्य)

दुर्गन्धा जब बनी रोहणी, किया रोहणी।
वणिक बना अशोक राजा जब, किया रोहणी॥
वह राजा प्रभु वासुपूज्य के, समवसरण में।
संन्यासी बन जा पहुँचा वह, मोक्षशरण में॥

बनी रोहणी रानी आर्या, स्वर्ग सिधारी।
स्वर्ग त्याग जल्दी पायेगी, मोक्ष सवारी॥
सम्यग्दर्शन सहित रोहणी, हो प्रभु जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 25॥

ॐ ह्रीं देहदुर्गन्धिनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(मुक्तावली अर्घ्य)

मुक्तावलि व्रतकर दुर्गंधा, स्वर्ग भोगकर।
तथा पद्मरथ पुत्र बनी फिर, प्रभु का गणधर॥
गणधर जैसे हमें मोक्ष हो प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥ 26॥

ॐ ह्रीं आत्मसुगन्धिदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

कभी द्रव्य से कभी भाव से, कभी न दोनों।
कभी बाह्य से कभी आंतरिक, कभी न दोनों॥
ऐसे कितनी बार अर्घ्य हम, चढ़ा चुके हैं।
किन्तु लक्ष्य तो हुआ न हासिल, अतः थके हैं॥

भव-भव की ये थकान स्वामी, कब मिट जायें।
अतः द्रव्य ले भाव बना कर, अर्घ चढ़ायें॥
ज्ञाता दृष्टा रह जायें बस, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

(सोरठा)

विनय भक्ति से आज, वासुपूज्य प्रभु को नमन।
पायें निज साम्राज्य, मोक्ष महल में हो भ्रमण॥

ॐ ह्रीं वैराग्यतपवर्धक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

भाव सहित गुणगान को, मन-भौंरा बेचैन।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, वंदन दे सुख चैन॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! वासुपूज्य जी, जय हो! पहले बालयति।
श्रद्धा-सुमन चढ़ायें हम सब, आप पूज्य हो जगत्पति॥
नाथ! आपके गुण गाने को, आज भक्त हम उद्यत हैं।
देख विशाल महायश वैभव, हाथ जोड़ हम तो नत हैं॥ 1॥

गुण-गण तो क्या? हम कह सकते, अतः शरण की आशा है।
भक्त और भगवन् की जोड़ी, अजब-गजब परिभाषा है॥
तुम ज्ञानी हो हम अज्ञानी, आप मृदुल हम मानी हैं।
आप रहे हो ठोस ज्ञानधन, हम तो बहते पानी हैं॥ 2॥

तुम पालक हो हम बालक हैं, तुम योगी हो हम भोगी।
तुम दाता हम रहे भिखारी, आप स्वस्थ हम हैं रोगी॥
तुम शंकर हो हम कंकर हैं, तुम धर्मी हो हम पापी।
आप पूज्य हो पतित रहे हम, तुम दयालु हम अभिशापी॥ 3॥

हम तो अणु तुम विराट हो प्रभु, तुम सिंधु हम हैं बिंदु।
तुम सूरज हो, हम तो रज हैं, हम जुगनू तुम हो इंदु॥
तुम अनंत हम शून्य रहे हैं, आप शिखर हम तो धूलि।
महा-महा तुम और कहाँ हम, तुम सक्षम हम मामूली॥ 4॥

तुम सुखिया हो, हम दुखिया हैं, आप निराकुल हम आकुल।
क्षमाशील तुम हम क्रोधी हैं, आप तृप्त हैं हम व्याकुल॥
ज्ञान ज्योति तुम हम अँधयारे, हम कुरूप तुम सुंदर हो।
हम हैं रागी तुम वैरागी, पूर्ण दिगम्बर मंदिर हो॥ 5॥

फिर कैसे हो मिलन हमारा, सत्पथ कब दिखलाओगे।
आप फूल हो हम शूलों को, कैसे गले लगाओगे॥
कुछ-कुछ हमको करना होगा, कुछ-कुछ आप करो स्वामी।
पूज्य बनें हम सुखी रहें हम, सिद्ध बनें हम आगामी॥ 6॥

लेकिन हमको पिछली यादें, तजनी होगीं सब बातें।
वर्तमान यदि सुधर गया तो, सुप्रभातमय हों रातें॥
तभी मोह मद राग द्वेष को, मंद-मंदतम करना है।
भावनाएँ बारह भाकर के, बारह तप उर धरना है॥ 7॥

हर प्रयास हो सफल हमारा, कृपा आप की पाकर के।
कथा रोहणी मुक्तावली सम, सिद्ध करें गुण गाकर के॥
ब्रह्मानंद स्वरूपी हम हों, वासुपूज्य की कर पूजा।
अद्वितीय बनने को 'सुव्रत', पूज्य शरण में झट तू जा॥ 8॥

(सोरठा)

वासुपूज्य जिनदेव, तुम्हें सदा जो पूजते।
मुक्त हुए स्वयमेव, मोक्ष महल में पहुँचते॥
अतः बनाकर भाव, की पूजा नत शीश हो।
पायें ब्रह्मस्वभाव, बस ऐसा आशीष हो॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

वासुपूज्य स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, वासुपूज्य जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री वासुपूज्यविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

सिद्धक्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, वासुपूज्य विधान॥
दो हजार तेरह दिसम्बर बुध दो कम बीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : रंगमा-रंगमा....)

आरती - आरती - आरती रे।[2]
प्रभु तेरी उतारें हम आरती रे ॥[2]
वासुपूज्य प्रभु हैं अंतर्यामी।[2]
जिनको करें हम सदा ही नमामि ॥[2]
जिनकी कृपा हमको तारती रे।[2] प्रभु.....
वसुपूज्य राजा के राज दुलारे।[2]
जयावती माता के नयन सितारे ॥[2]
हम भक्तों के शिव सारथी रे।[2] प्रभु.....
न की सगाई न शादी रचाई।[2]
मुक्तिवधू संग प्रीति बढ़ाई ॥[2]
हुए पहले बालयति महारथी रे।[2] प्रभु.....
पाँचों कल्याणक चंपापुरी में।[2]
कर डाले तुमने (प्रभु) आतम धुरी में[2]
भक्तातम तुम को निहारती रे।[2] प्रभु.....
ज्योति जलाके, हमने पुकारा।[2]
नैया सँभालो (प्रभु) दे दो सहारा ॥[2]
'सुव्रत' की भक्ति पुकारती रे।[2] प्रभु.....